वैदिक साहित्य मे वास्तु विद्या वर्णन हि वर्णन

भवन-निर्माण-कला के ज्ञान को प्रदान करने वाली विद्या को ''वास्तुशास्त्र'' कहते हैं। हमारे वैदिक- साहित्य में विश्वकर्मा को इस शास्त्र का आदि-प्रणेता माना जाता है जिन्होंने देवताओं के, देवराज इन्द्र के तथा पाण्डवों के रहने वाले विचित्र भवन का निर्माण किया था। पाँडवों के भवन की विचित्रता यह थी कि जहाँ पानी दिखाई देता था वहाँ सूखा था और जहाँ सूखा दिखलाई देता था वहाँ पानी था। जब इस विचित्र-भवन में दुर्योधन को आमंत्रित किया गया था, ताकि वह इसे देखकर प्रसन्न हो तब उसने उस स्थान पर चलने से पूर्व अपने अधोवस्त्र सम्हाल लिये थे जहॉ पानी दिखता था। पर था नही तो भी वह अपने को सम्हाल हीं सका। इस घटना को देखकर पॉचाली, दुर्योधन की मूर्खता पर खिलखिलाकर हंस पडी। यह देखकर दुर्योधन ने कुपित होकर उसे देखा, तभी प्रत्युत्तर के रूप में द्रौपदी बोली----''अँधे की औलाद भी अँधी ही होती है।'' दुर्योधन विष का सा घूँट पीकर रह गया। कदाचित यही प्रतिशोध की भावना महाभारत के महायुद्ध की भूमिका बनकर उभर पडी खैर, जो भी बात हो, यह वास्तुशास्त्र के जनक देव विश्वकर्मा के कौशल का कमाल नहीं तो और क्या था ?

अकेले ऋग्वेद में ही ऐसे अदभुत करीगर विश्वकर्मा के कौशल्य पर अनेक मंत्र मिलते है, देखिये---

१ - कार्मारो अश्मभिर्द्युमिः। ९.११२.२

अर्थात--कारीगर पत्थर पर रगड़कर और आग में तपाकर बाण बनाता है।

२ - चक्षुषः पिता मनसा हि धीरः। १०.८२.१.

अर्थात-- विश्वकर्मा (ईश) नेत्रादि इन्द्रियों का निर्माता और मनोबल वाला है।

३ - धामानि वेद भुवनानी विश्वा। १०.८२.३.

अर्थात-- विश्वकर्मा (ईश) सारे लोको और स्थानों को जानता है।

४ - यात्रा सप्तऋषीन पर एकमाहुः। १०.८२.२.

अर्थात- वह एक विश्वर्कमा (ईश) सप्तऋषियों (ज्ञानइन्द्रियों) से परे है।

५ - यो देवानां नामधा एक एव। २०.८२.३.

अर्थात्- वह विश्वर्कमा (ईश) ही सब देवों के नाम वाला है।

६ - यो नः पिता जनिता यो विधाता। १०.८२.३.

अर्थात- वह विश्वर्कमा (ईश) हमारा पिता, जनक और निर्माता है।

७ - वाचस्पतिं विश्वर्कमाणभूतये, मनो जुवं'''' हुवेम। १०.८१.७.

अर्थात- मनोवेग और ज्ञानाधिपति विश्वकर्मा (ईश) को हम पुकारते हैं।

८ - विश्वकर्मा'''' घाता विधाता परमोत संदृक्।१०.८२.२.

अर्थात्- वह विश्वर्कमा (ईश) घर्ता, निर्माता द्रष्टा है।

देखा आपने, ऋग्वेद जैसे आर्यो के और संसार के सर्वप्रथम ग्रन्थरत्न (जिसे यूनेस्कों ने धरोहर के रूप में माना है) विश्वकर्मा को कितना आदर दिया है, उसे ईश अर्थात् ईश्वर तक कहा गया है। इससे सिद्ध हो जाता है कि हमारा वास्तुशास्त्र स्वयँ वेदसदृष्य ईश्वरकृत है, ईश्वर सदृष्य है, ईश्वर रूप है।

।। वास्तुशास्त्रानुसार गृह-निर्माण ।।

अब देखिये, विश्वकर्मा गृह-निर्माण-कला को हम तक कैसे पहुँचाते है ? स्वयँ ऋग्वेद कहता है--

१ - अपामिदं न्ययनं, समुद्रस्य निवेशनम्। १०.१४२.७.

घर में जलाशय या बडां सरोवर होना चाहिये।

२ - आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः। १०.१४२.८.

घर में, आने जाने के मार्ग में, फूल युक्त लतायें आफर दूब हो।

३ - वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्र सोम्यानाम्। ८.१७.१४.

हे गृहपति! तेरे मकान के खम्बे दृढ हौं और वे सज्जनों के रक्षक हों।

४ - सत्रेव प्राचो वि मिमाय मानैः। २.१५.३.

घर पूर्वाभिमुख एवँ ठीक नाप से बनाया गया हो।

५ - ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि, समुद्रस्य गृहा इमे। १०.१४२.८.

घर में सरोवर एवँ कमल हों और सरोवर के मध्य में घर हो।

दिल्ली में बना बहाबियों का कमलरूप बना मंदिर, जिसे 'लोटस टैम्पिल' कहते हैं, तथा सिक्खों का अमृतसर में सरोवर के मध्य बना गुरूद्वारा, जो पंजाब में हैं, इसके ज्वलन्त उदाहरण है। आगरे में बना ताजमहल भी, कुछ कुछ, इसी शैली में बना, भवन है। कुछ लोग इसे 'तेज-महा- आलय' भी कहते हैं।

वास्तुशास्त्र में नगर-निर्माण-कला के भी नियम लिखे हुये हैं। ऋग्वेद कहता है--

१ - त्वं पुर चरिष्ण्वं वधैः, शुषास्य सं पिणक्। ८.१.२८.

इन्द्र ने राक्षसों के चलते फिरते नगर को नष्ट किया।

२ - पुरः कृणुध्वमायसीट धृष्टाः। १०.१०१.८.

तुम अजेय और लोहे के प्रकार वाली नगरी बनावो।

३ - मही न आयसी''''' पूर्मवा शतभुजिः। ७.१५.१४.

नगरी लोहे के प्रकार वाली और सैनिकों से सुसज्जित हो।

ऋग्वेद में, विश्वर्कमा निर्मित नौका, पोत, विमान आदि का भी विशेष वर्णन है, जो ध्यान देने योग्य भी है।

।। इति ।।

आचार्य रसिक बिहारी मंजूल